विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -06 – 09 - 2021**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज अधिकरण कारक के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

अधिकरण कारक

अधिकरण कारक की परिभाषा

अधिकरण का अर्थ होता है- आश्रय। संज्ञा का वह रूप जिससे क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

अधिकरण कारक के विभक्ति चिन्ह

इसकी विभक्ति में और पर होती है। भीतर, अंदर, ऊपर, बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है।

अधिकरण कारक के उदहारण

जब मैं घर में गया तो कोई भी नहीं था।

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरण में देख सकते हैं कि में विभक्ति चिन्ह का प्रयोग किया गया है। यह बताता है की वक्ता घर के अंदर गया था।

जैसा कि हमें पता है, जब किसी वाक्य में में विभक्ति चिन्ह का प्रयोग किया जाता है तो वो अधिकरण कारक होता है। अतः यह उदहारण भी अधिकरण कारक के अंतर्गत आएगा।

वीर सिपाही युद्धभूमि में मारा गया।

ऊपर दिए गए वाक्य में जैसा कि आप देख सकते हैं, में विभक्ति चिन्ह का ही प्रयोग किया गया है।

हम जानते हैं की जब में विभक्ति चिन्ह का प्रयोग किया जाता है तो वहां अधिकरण कारक होता है। यहां में चिन्ह से हमें वीर सिपाही के युद्धभूमि में होने जा बोध हो रहा है। अतः यह उदारहण अधिकरण कारक के अंतर्गत आएगा।

कुर्सी आँगन के बीच बिछा दो।

जैसा कि आप ऊपर दिए गए वाक्य में देख सकते हैं बीच शब्द का प्रयोग किया गया है। जब यह शब्द प्रयोग किया जाता है तो वह अधिकरण कारक होता है।

यहाँ बीच शब्द से कुर्सी के आँगन के बीच होने का बोध हो रहा है। अतः यह उदाहरण अधिकार कारक के अंतर्गत आएगा।

अधिकरण कारक के कुछ अन्य उदाहरण

- मछली पानी में रहती है।
- महल में दीपक जल रहा है।
- वह रोज़ सुबह गंगा किनारे जाता है।